प्रातःक्लास ओमशान्ति *--: शिव बाबा याद है?:--* 1-2-68

बच्चों को समझाया गया है कि आत्माओं का निवास स्थान है टावर ऑफ सायलेन्स। यानि शान्ति की चोटी। जैसे हिमालय पहाड़ की चोटी है ना। वह बहुत ऊंची होती है। तुम रहते भी ऊंच ते ऊंच हो। वह लोग पहाड़ों आद पर चढ़ने की प्रेक्टीस करते हैं। डोरी पर चढ़ते हैं। तुम बच्चे तो जाते हो शान्ति धाम, वह तुम्हारा निवास स्थान है। पहाड़ चढ़ने में भी कोई2 होशियार होते हैं। सभी नहीं चढ़ सकते। तुम बच्चों को इस में डोरी आद की दरकार नहीं। आत्मा जो पतित है, उसको पावन बन ऊपर जाना है। इसको कहा जाता है टावर ऑफ सायलेन्स। और वह फिर है टावर ऑफ सायंस। उनके बड़े2 गोले होते हैं। उनका भी टावर होता है। खोपनाक चीजें, ज़हर आद गोलों में डालते हैं। बाप कहते हैं तुमको उड़ना है घर तरफ। वे फिर वहां ही घर बैठे बम्ब ऐसे फेंकेंगे जो सभी को खतम कर देंगे। तुमको तो यहां से ऊपर जाना है। टावर ऑफ सायलेन्स। वहां से ही तुम आये हो फिर जावेंगे... तब जब सतोप्रधान बन जावेंगे। सतोप्रधान से तमोप्रधान में आये हो। फिर सतोप्रधान बनना है। जो सतोप्रधान बनने पुरुषार्थ करते हैं वह फिर औरों को भी रास्ता बताते हैं। तुम बच्चों को अभी सुकर्म करना है। कोई भी विकर्म न करना है। बाप ने कर्मों की गति भी समझाई है। रावण राज्य में तुम्हारा दुर्गति हुई है। अब फिर बाप सुकर्म सिखलाते हैं। 5 विकार बड़ी दुश्मन है। मोह भी विकर्म है। एक भी विकार कम विकर्म नहीं है। मोह रखनेसे भी देहाभिमान में फंस मरते हैं। तो इसलिए बाप बैठ समझाते हैं। कन्या को तो सब से जास्ती सहज है। तुम सभी कन्यायें हो। कन्या पवित्र को कहा जाता है। माताओं को भी पवित्र बनना है। ब्रह्माकुमारियां हो ना। भल बुढ़ी हैं पर ब्रह्मा के तो बच्ची है ना। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों को अब कुमारी के भी स्टेज से नीचे उतरो। जैसे पहले शरीर में आये हो ऐसे फिर निकल जाना है। मेहनत करनी है अगर ऊंच पद पाने चाहते हो तो। और कोई भी स्मृति न आये। हमारे पास है ही क्या। हाथ खाली आये हैं ना। कुछ भी नहीं। शरीर भी नहीं था। अब इस शरीर को भी भूलना है। अनासक्त कर्मातीत बन जाना है। दृस्टी बनो। बाप कहते हैं भल घूमो-फिरो, बाकी फालतू खर्चा न करो। मनुष्य दान भी बहुत करते हैं। अखबार में पड़ता है फलाना बहुत दानी था, हास्पीटल कालेज आद बनाई। जो बहुत दान आद करते हैं उनको गवर्मेन्ट से टाईटल आद भी मिलते हैं। तुमको भी बहुत बड़ा टाईटल मिलता है। पहले2 टाईटल होता है हिज़ होलीनेस, हर होलीनेस। होली पवित्र को कहा जाता है। जैसे पवित्र थे ऐसे पवित्र बनना है। फिर आधा कल्प पवित्र रहेंगे। तुमको बहुत कहेंगे यह कैसे हो सकता है, वहां भी तो बच्चा पैदा होते हैं। तुम फट से बोलो वहां कोई रावण राज्य थोड़े ही है। रावण द्वारा ही विकारी दुनिया होती है। राम बाप आये पावनबनाते हैं। वहां पतित कोई हो कैसे सकता। कोई तो समझते हैं पावत्रता की बात भी नहीं करनी चाहिए। सृष्टि कैसे चल सकेगी। यह पता ही नहीं है कि पवित्र दुनिया थी। अभी विषस दुनिया है। यह खेल शिवालय-वेश्यालय। पतित-दुनिया, पावन दुनिया। पहले है सुख फिर दुःख। कहानी हो ती है ना। कैसे राजाई ली फिर कैसे राजाई गवांई। अभी इसको अच्छी रीत समझना है। हमने हार खाई फिर जीत पाने बहादुर बनना है। अपनी अवस्था को जमानी चाहिए। घर-बार होते उन्हों के सम्भाल करते, पवित्र रहना है। कोई अपवित्र का न हो। मोह भी तो बहुतों को होता है। अपने को देखना चाहिए किसने तो प्रतिज्ञा की है कि आप के सिवाय किसको भी प्यार न करेंगे। फिर दूसरों को क्या प्यार करते हो। जो प्यारी ते प्यारी चीज़ है वही याद आनी चाहिए। फिर और सभी देह के सम्बन्ध भूल जाना चाहिए। सब को देखते हुये समझें हम तो अभी स्वर्ग में रहे हैं। यह तो सभी कलियुगी बन्धन है। हम तो अभी देवी सम्बन्ध में जा रहे हैं। और कोई मनुष्य की बुधि में यह ज्ञान नहीं है। तुम बाप को याद में अच्छी तरह रहो तो अन्दर में खुशी का पारा भी चढ़े। बाहर से दिखाना है ऐसे नहीं बड़े2 गोर आद रखनी है। ऐसा कुछ होगा तो बन्धन रहेगा। बन्धन जितना हो सके कम

हो। मनुष्य वानप्रस्त में जाते हैं तो फिर घूमना फिरना मोटर आद छोड़ देते हैं। तो अपने को हल्का करना चाहिए। बन्धन बढ़ाने की दरकार नहीं। इस राज्य पाने में पैसे आद की दरकार नहीं। बिगर कोई खर्चा तुम विश्व की बादशाही लेते हो। उन्हों को बाग्ड, लश्कर आद पर कितना खर्चा होता है। तुम्हारे पास अर्थ कुछ भी नहीं। इसको दान कहा जाता है। बाबा को देते नहीं परन्तु लेते हैं। बाप तो हैं गुप्त। वह श्रीमत देते रहते हैं। ऐसे करो। म्युज़ियम खोलो। यह है रूहानी युनिवर्सिटी और हास्पीटल। यूनिवर्सिटी से तुम नालेज प्राप्त करते हो। और हास्पीटल अर्थात योग से तुम सदैव के लिए निरोगी बनते हो। हैल्थ-वैल्थ, उनके साथ हैपीनेस भी है। 2। जन्म लिए तन्दुरुस्ती, सुख-शान्ति, एक सेकन्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति कैसे मिलती हैं आकर समझो। दर पर हो तुम समझा सकते हो। जैसे दर पर भिक्षा लेने आते हैं ना। तुम यह जैसी भिक्षा देते हो। जिससे भ एकदम मालामाल हो जाये। कोई भी हो, बोलो तुम भिख क्या मांगते हो। हम तुमको ऐसे भीख देते हैं जो जन्म-जन्मान्तर भीख मांगने से छूट जावेंगे। बेहद के बाप की और, सृष्टि चक्र को जानने से तुम यह बन जावेंगे। तुम्हारा यह बैज बहुत कमाल कर सकती है। सेकन्ड में बेहद का वर्सा तुम इन से दे सकते हो सर्विस करनी चाहिए ना। बाप सेकन्ड में विश्व का मालिक बनाते हैं। फिर है पुरुषार्थ पर। छोटे बड़े सब को कहा जाता है बाप को याद करो। इन में भी तुम बैज पर सर्विस कर सकते हो। छोड़ना न चाहिए। ट्रेन में अन्दर घुस जाने में कोई रोक नहीं सकते हैं। टिकिट तो है। बैज एक दो पड़ा हुआ हो। सब को समझाते रहो तुमको मालूम है वो बाप है। दो से वर्सा मिल मिलता है। तीसरा फिर होता नहीं। ब्रह्मा से कोई वर्सा थोड़े ही मिलता है। यह तो दलाल हो गया। दो से मिलता है। लौकिक और पारलौकिक। इन द्वारा बाप तुम सिखलाते हैं वर्सा देते हैं। आसामी देखकर भी समझाना होता है। यात्रा पर भी बहुत जाते हैं। वह सभी है जिस्मानी यात्रा। यह है रूहानी। इससे तुम विश्व का मालिक बनते हो। जिस्मानी यात्रा से तुम धक्के खाते रहते हो। सीढ़ी का चित्र भी साथ में हो। कच्छ में तुमको यही रहना है और क्या। ताकत रहती है फिर इनको भोजन आद भी प्रवाह नहीं रहती है। खुशी में भोजन भी अच्छा नहीं लगेगा। कहा भी जाता है न खुशी जैसी खुराक नहीं। धन नहीं होता तो इनको घड़ी2 भूख लगती रहेगी। धनवान राजाओ आदि को जैसे पेट भर रहता है। बड़ी ही रायल चलन होती है। खान-पिन भी फर्स्ट क्लास। तुम समझते हो हम क्या बन रहे हैं। वहां खान-पान बड़ा रायलटी से होता है। बेहाईम कब खाते नहीं। बड़ा रायलटी, शान्ति से खाते हैं। सब गुण सिखने चाहिए ना [निराकार की महिमा, देवताओं की महिमा और अपनी महिमा तीनों की जांच करो।] अभी तुम बाबा के गुणों वाले बन रहे हो। फिर बनेंगे देवताओं के गुण वाले। तो वह गुणा धारण करनी चाहिए ना। अभी तुम सिखते हो। देवीगुण भी सिखने हैं। गाते हैं ना सुख का सागर, शान्ति का सागर, जैसे बाप पूजा जाता है तुम भी पूजे जायेंगे। बाप तुमको नमस्ते करते हैं ना। तुम्हारी तो पूजा भी डबल होती है। आत्माओं के बिन्दी रूप में भी पूजा होती है। और तुम फिर देवतायें हो। उस रूप में भी पूजा होती है। यह सभी बातें बाप ही समझा रहे हैं। तुम्हारी महिमा भी समझाई। अब पुरुषार्थ कर ऐसा बनो। दिल से पूछना चाहिए हम ऐसा बने हैं? जैसे हम बे नंगे असेंबे फिर आये थे फिर नंगे ही जाना है। शास्त्रों में भी है ना इनको बोलो लाठी भी छोड़ो। यह बातें शास्त्रों में बैठ लिखी है। ऐसा कोई हुआ नहीं है। इसमें तो लाठी की बात नहीं। शरीर को भी भूलना होता है। बाकी वह तो सभी हैं भक्ति मार्ग की बातें। यहां तो सिर्फ बाप को याद करना है। बाप बिगर दूसरा न कोई। तुम बच्चों को ज्ञान मिला है। समझ सकते हो भक्ति मार्ग में वह लोग क्या2 सिखाते हैं। कितने इन गुरुओं की जंजीरों में पड़े हैं। इन से छूटना है। अनेक प्रकार के गुरु हैं ना। अब ना गुरु न और कुछ पढ़ना है। बाबा ने एक ही मंत्र दे दिया है [मामेकं याद करो। वर्से को याद करो। और देवीगुण धारण करो।] सूक्ष्म गृहस्थ

1.2.68

व्यवहार में रहते हुये पवित्र बनना है। यहां थोड़े ही बैठ जाना है। यहां तो आते ही हैं रिफ्रेश होने। वहाँ तो समझते होहम बाबा के सम्मुख बैठे हैं। वहां समझेंगे बाबा मधुवन में बैठा है। यहां सामने हैं। जैसे हमारी आत्मा इस तख्त पर बैठी है वैसे बाबा भी इस तख्त पर बैठे हैं। बाबा कब कोई गीता आद शास्त्र आद नहीं लेते हैं। ऐसे भी नहीं इसने कोई कंठ किया है, साधु-सन्यासी लोग कं० करते हैं। यहतो है ज्ञान सागर। ब्रह्मा द्वारा सब राज़समझाते हैं। शिव बाबा कब कोई स्कूल में, सतसंग में गया क्या। नहीं। बाप तो सबकुछ जानते हैं। कोई कहे =क्या भला संपूर्ण जानते हैं? बाप कहते हैं संपूर्ण से हमको क्या करना है। मुझे बुलाते हैं कि आकर पतित से पावनबनाओ। इस में संपूर्ण क्यों सिखूं। कहेंगे शिव बाबाफलाने शास्त्र पढ़े हैं? और इनके लिए कहा ही जाता है ज्ञान सागर, शान्ति का सागर। बाप खुद कहते हैं शास्त्र आद सभी भक्ति मार्ग के हैं। और इनमें हैं सारे झूठ। कितनी बातें बनाई हुई है। विष्णु के हाथ में शंख आद दिया है। अर्थ का पता नहीं है। वास्तव में यह अलंकार ब्रह्मा का ब्राह्मणों को देना चाहिए। विष्णु तो सूक्ष्मवतन में लाया ही क्यों है। यह अलंकार श्रृंगार आद सूक्ष्मवतन में होते हैं क्या? हां तुमको सा० हो सकता है। क्योंकि चित्र देखा है। सूक्ष्मवतन में तो हड्डी मास ही नहीं। तो यह अलंकार फिर कैसे होंगे। देखा है तो सिर्फ सा० होता है? बाकीकुछ है नहीं। ब्रह्मा का भी सा० बहुतों को घर बैठे होते हैं। कृष्ण का सा० बहुतों को होता है। इसका अर्थ ही है ब्रह्मा के पास जाओ तो इस कृष्ण जैसा बन जावेंगे। वह कृष्ण गोद में आ जावेगा। वह सिर्फ प्रिन्स पने का सा० होता है। अगर तुम अच्छी रीत पढ़ेंगे तो यह बन सकते हैं। यह है एम आबजे क्ट। सम्पूर्ण तौर तो एक का ही बनावेंगे। इसको माडल कहते हैं। तुम समझते हो बाप आया है श्री नारायण की कथासुना नर से नारायण बनाने। पहले तो जरूर प्रिन्स बनेंगे। शास्त्रों में दिखाया है कृष्ण ने माखन खाया। भूखा था क्या= क्या। वास्तव में यह है विश्व की बादशाही का गोला। बाकी चन्द्रमा आद को मुख में दिखावेंगे। बात यह है दो दिल्ले आपस में लड़े, बीच में जो सृष्टि का मालिक बना इनको माखन दिखा दिया है। अब आपस में पूछो हम ऐसे बने हैं या नहीं। यह पढ़ाई है राजाई पद के लिए। प्रजापाठशाला थोड़े ही कहेंगे। यह है ही नर से नारायण बनने की पाठशाला। गाडली युनिवर्सिटी। भगवान पढ़ाते हैं। युनिवर्सिटी भी लिखने नहीं देते। बाबाने कहा था लिखो ईश्वरीय विश्व विद्यालय। इनके नीचे लिखो गाडली वर्ल्ड युनिवर्सिटी। बात तो एक ही है। तुमको कोई कह न सकेंगे। ईश्वरीय विश्व विद्यालय लिखना अलो करते हैं। बाकी युनिवर्सिटी अक्षर लिखने न दिया। अजन लड़े नहीं हैं। बाबा कहते हैं ब्राईकेट में लिख दो। परन्तु यह= यह लिखना भी भूल जाते हैं। फिर भी पत्थर बुद्धि मनुष्य कुछ समझते थोड़े ही हैं। तुम कितना भी किसको लिटरेचर आद दो। समझ न सकेंगे। इसमें तो सम्मुख समझाना होता है। बेहद के बाप से यह बेहद का वर्सा मिलता है। जन्म-जन्मान्तर तुम हद के वर्सा लेते आये हो। तुम इस बेज परबहुत सर्विस कर सकते हो। भल कोई हंसी करे, कुछ भी करे यह तो दो बाप के स्क्युरेट बात है। अज्ञान काल में लौकिक बाप भी कहते हैं भगवान को याद करो। अब तोकहेंगे मैं हद का बाप हूं। बेहद का बाप एक ही शिव बाबा है उनको याद करना है। उन से बेहद का वर्सा लो। ऐसे बहुत अपने बच्चों को समझाते हैं। बच्चे बाप को समझाये ले आते हैं। स्त्री पति को लाती है, कहां2 फिर झगड़ा भी चलता है। अभी तुम जानते हो हम आत्माओं को बाप से वर्सा लेना है। तुम सब आत्मायें बच्चे हो। सब वर्से के हकदार हो। लौकिक सम्बन्ध में तो बच्ची जाये दूसरा घर बसाती है। उनको फिर कन्या दान कहा जाता है। दूसरे को देते हैंना। अभी तो ऐसे कन्या दान भी न करना चाहिए। यही पाप तो करते आये हो। पाप चढ़ता है ना। सभी पापात्मा बन पड़े हैं। अब तो यह काम न करना है। वहां भी बच्ची कोदना है लेना है पर पवित्र रहते हैं। पाप होता नहीं। वह हैं शिवालय-यह हैं वेश्यालय। तुम स्वर्ग में तो जरूर जावेंगे। बाकी पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है। दिल से पूछना है हम फलानी मिशन सर्विस करते हैं। अच्छा बाबा गुडमार्निंग।